हिंदी साहित्य का उदयकाल : विन्यास और संवेदनाएँ

(तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक शिविर)

14 से 16 जनवरी 2024

विद्याश्री न्यास एवं हिंदुस्तानी एकेडे मी, प्रयागराज (भाषा विभाग, उत्तर प्रदेश शासन के नियंत्रणाधीन) ; साहित्य अकादमी, नई दिल्ली तथा लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय , दीनदयाल उपाध्याय नगर, चंदौली के संयुक्त तत्वावधान में श्री धर्मसंघ शिक्षा मंडल सभागार, वाराणसी में 'हिंदी साहित्य का उदयकाल : विन्यास और संवेदनाएँ' विषय पर केंद्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक-शिविर (14 -16 जनवरी 2024) का उद्घाटन अध्यक्ष श्री सुरेंद्र दुबे (उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल), मुख्य अतिथि डॉ. दयाशंकर मिश्र 'दयालु' (राज्यमंत्री ,स्वतंत्र प्रभार, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ) एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. आनंद कुमार त्यागी (कुलपति, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी), प्रो. रजनीश शुक्ल (पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा), तथा श्री अशोक तिवारी (महापौर, वाराणसी) एवं प्रो. गिरीश्वर मिश्र (पूर्व कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा) के द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन, माँ सरस्वती और पं. विद्यानिवास मिश्र की चित्र पर माल्यार्पण, आ. जयन्तपति त्रिपाठी के वैदिक मंगलाचरण, आ. मृत्युंजय त्रिपाठी के घनपाठ तथा प्रो. उमापति दीक्षित के पौराणिक मंगलाचरण एवं पूर्वोत्तर की छात्राओं हिमाश्री फुकन एवं हृतिराज छेत्री के बिहू नृत्य के साथ हुआ। डॉ. दयानिधि मिश्र ने अतिथियों का भावपूर्ण स्वागत करते हुए संगोष्ठी के लिए चयनित विषय के औचित्य पर भी प्रकाश डाला। इस अवसर पर सम्मानित अतिथियों ने प्रभात प्रकाशन और महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित 'पं. विद्यानिवास मिश्र रचनावली' (21 खंड) तथा प्रलेक प्रकाशन से प्रकाशित 'हिंदी साहित्य का उदयकाल' का, इन दोनो पुस्तकों के संपादक डॉ. दयानिधि मिश्र और प्रलेक प्रकाशन के निदेशक श्री जितेन्द्र पात्रो के साथ लोकार्पित किया। पुष्प-संपदा के भीतर से पुस्तकों के अवतरण की जिस भव्य-दिव्य प्रविधि को पिलग्रिम्स प्रकाशन के निदेशक श्री रामानंद तिवारी 'सनातनी' ने आकार दिया उसने सहृदय समाज को मोह लिया। डॉ. अरुणेश नीरन (देवरिया) ने रचनावली के प्रकाशन की चुनौतियों और इसके महत्त्व पर प्रकाश डाला। न्यास द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किए जाने वाले सम्मानों के क्रम में मंचस्थ अतिथियों एवं न्यास के सचिव श्री दयानिधि मिश्र ने इस वर्ष के आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान से प्रोफेसर अनंत मिश्र को, आचार्य विद्यानिवास मिश्र लोककवि सम्मान से श्री कमलेश राय को, राधिका देवी लोककला सम्मान से श्री मंगल यादव 'कवि' को, श्री कृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान से श्री चंद्रभाल सुकुमार को एवं आचार्य विद्यानिवास मिश्र पत्रकारिता सम्मान से श्री रजनीश त्रिपाठी को उत्तरीय, नारियल, माला, पंचपुस्तक , प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और सम्मान राशि से सम्मानित किया। इस सम्मान-समारोह को डॉ. डी.एन. पाण्डेय एवं आ. श्रीकृष्ण शर्मा ने शंख-ध्वनि से तथा आ. जयंतपति त्रिपाठी एवं आ. श्रीकृष्ण शर्मा ने स्वस्ति-वाचन से और सुश्री अंजलि ने प्रशस्ति-वाचन से गरिमा प्रदान की। सम्मानित विभूतियों ने अपने स्वीकृति-वक्तव्य में पंडित जी के व्यक्तित्व-कृतित्व को याद किया।

विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर अनंत कुमार त्यागी ने साहित्य के प्रति आज की पीढ़ी के आकर्षण के लिए नए रास्तों के अन्वेषण और ज्ञान के विविध अनुशासनों के समन्वय की आवश्यकता बताई। श्री अशोक तिवारी ने कहा कि आचार्य विद्यानिवास मिश्र को याद करना संपूर्ण भारतीयता को याद करना है। प्रो. रजनीश शुक्ल ने बताया कि जो ज्ञान पंडित जी से मिला है वह गुरु-ऋण है, और उस ज्ञान को अगली पीढ़ी तक स्थानांतरित करके ही उसे चुकाया जा सकता है। उन्होंने रचनावाली को डॉ. दयानिधि मिश्र एवं प्रो. गिरीश्वर मिश्र के श्रम, स्वाध्याय और निष्ठा का प्रतिफल बताया। मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश के राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री दयाशंकर मिश्र (दयालु) ने विद्याश्री न्यास के विभिन्न उपक्रमों को काशी के साहित्यिक-सांस्कृतिक जीवन की सकारात्मकता के रूप में रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि पूज्य मिश्र जी के लेखन के संस्पर्श से मुझे आत्मीय सुख मिलता रहा है। हिंदी साहित्य के उदयकाल की चर्चा करते हुए उन्होंने भारतीय इतिहास-बोध के संदर्भ में भी इसके अध्ययन की आवश्यकता बताई। इस तरह के साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनों की निर्बाध निरंतरता बनी रहे, इसके लिए एक सभागार के निर्माण हेतु राज्यमंत्री ने अपनी निधि से ₹ 25 लाख देने की बात कही। अपने अध्यक्षीय

Edit with WPS Office

उद्बोधन में श्री सुरेंद्र दुबे ने कहा कि विद्यानिवास जी का सानिध्य पाना लोक और वेद से गुजरना है। भारत जीवंत अतीत को याद करता है और यह परंपरा से ही संभव है। यह सनातन परंपरा ही है जो नित्य नूतनता का आकांक्षी रहा है। सनातन एक जीवंत वर्तमान है और पंडित जी इसी जीवंत वर्तमान की खोज करते हैं। 'परंपरा बंधन नहीं' में पंडित जी कहते हैं, "परंपरा हमारी ऊर्जा का स्रोत है हमारी सांस्कृतिक चेतना का द्योतक है इसलिए कालजयी है।" हिंदी साहित्य के उदयकाल की चर्चा करते हुए उन्होंने भाषा की प्रकृति और उसके विकास-क्रम को समझने में भी इस काल के साहित्य-आधारित अध्ययन को उपयोगी बताया। प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने इस सत्र के सुधीजन के साथ ही इस वृहत् रचनावली को साकार करने वाले समस्त सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उद्घाटन सत्र का संयोजन प्रकाश उदय ने किया।

दूसरा, अकादमिक सत्र बीज वक्तव्य के साथ ही सिद्ध, नाथ एवं जैन साहित्य पर केंद्रित था। बीज वक्तव्य के रूप में प्रो. चितरंजन मिश्र (गोरखपुर) ने उदय काल नाम की सार्थकता एवं उसके महत्व पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि इस नाम में सृजनात्मकता है । इसमें 8वीं से लेकर 14वीं शताब्दी तक की उन सभी प्रवृत्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है, जो सरहपा से लेकर कबीर तक पहुँचती हैं और 'देसिल बयना सब जन मिठ्ठा' के विश्वास में व्यक्त होती हैं। इस काल के साहित्य को धार्मिक और लौकिक में हम अपनी सुविधा से बाँट लेते हैं लेकिन वस्तुतः वह लोक-वाणी ही है। संवेदना के स्तर पर इस काल की कविता कट्टरता का विरोध करती है । उन्होंने सिद्ध, नाथ, जैन साहित्य, रासो काव्य और खुसरो, विद्यापति के उदाहरणों से उन प्रवृत्तियों को रेखांकित किया जिन्होंने भक्ति, रीति और आधुनिक काल तक को प्रभावित किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री देवेंद्र प्रताप सिंह (सचिव, हिंदुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज) ने उदयकाल के स्रोत के रूप में अपभ्रंश से लेकर संस्कृत साहित्य तक का विश्लेषण प्रस्तावित किया। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस समय में संस्कृति और साहित्य का संरक्षण भी हमारा एक प्रमुख दायित्व है। प्रो. प्रभाकर सिंह (वाराणसी) ने कहा कि उदयकाल देशी भाषाओं की बहुलता का सृजनकाल है, यह जितना लिखित है उतना ही वाचिक है और साहित्येतिहास-लेखन में इसका खयाल रखना जरूरी है। डॉ. सतीश पाण्डेय (मुंबई) ने नाथ और नाथ संप्रदाय की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए सिद्ध किया कि गोरखनाथ साधक योगी ही नहीं, दार्शनिक, धर्मपथ-प्रदर्शक, युगद्रष्टा रचनाकार और सामाजिक क्रांति के प्रणेता हैं। डॉ. अवधेश शुक्ल (वर्धा) ने गोरख और गोरख-वाणी के अखिल भारतीय प्रसार और प्रभाव पर प्रकाश डाला। डॉ. दिनेश पाठक (मुंबई) ने सिद्ध साहित्य के उन सामाजिक-साहित्यिक प्रदेयों की चर्चा की जिनका पल्लवन आगे चलकर संतकाव्य में भी हुआ। अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. अनंत मिश्र (गोरखपुर) ने उदयकाल की पाठ-संबंधी समस्याओं को रेखांकित करते हुए कहा कि पाठ बहुत सीमित हैं, अत : मूल पाठों की ओर पुनः-पुनः लौट कर पाठों के अध्ययन पर विशेष बल देना चाहिए। प्रारंभिक साहित्य के पाठों को तय कैसे करें, इसका निर्णय भी हमें बहुत सावधानी से करना चाहिए। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि कर्म और श्रम के बीच जो अलौकिक और रहस्य की बात करते हैं उनका ज्ञान अधिक श्रेष्ठ है और भारतीय वैचारिकी का यह भी एक महत्त्वपूर्ण प्रकार है। उदय काल में अध्यात्म एक तरह से लोकतांत्रिक हुआ और साहित्य जड़ता से सूक्ष्मता की ओर स्पंदित हुआ। इस सत्र का संयोजन प्रो. श्रद्धानंद (वाराणसी) ने किया।

तीसरे सत्र में श्री विश्वास पाटिल (शहादा, महाराष्ट्र) की अध्यक्षता में उदयकाल के लौकिक साहित्य पर विचार किया गया। डॉ. मनीषा खटाटे (नासिक) ने साहित्य और संगीत के क्षेत्र में अमीर खुसरो के योगदान की चर्चा करते हुए उन्हें भारतीय लोक की अपनी आवाज के रूप में रेखांकित किया। प्रो. भारती गोरे (औरंगाबाद) ने खुसरो-कृत 'खालिक बारी' से संबंधित तमाम विवादों की पड़ताल करते हुए उसके वैशिष्ट्य को उजागर किया। डॉ. विनीता कुमारी (दिल्ली) ने एक प्रेमकाव्य, विरहकाव्य और संदेशकाव्य के रूप में अब्दुल रहमान के 'संदेश रासक' के निजी वैशिष्ट्य को प्रकट किया। यह अवधारणा ही कि यह काव्य न मूर्ख के लिए है, न पंडित के लिए, उनके लिए है जो इनके बीच के हैं, 'मझ्ययार' हैं, अपने आप में विलक्षण है। प्रो. अवधेश प्रधान ने विद्यापति के उस व्यक्तित्व और काव्यत्व पर प्रकाश डाला जो उनकी कीर्तिलता जैसी कृति से व्यक्त होती है। इस कृति के आधार पर कहा जा सकता है कि विद्यापति न सिर्फ भक्ति और शृंगार के कवि हैं, बल्कि कविता में यथार्थवादी धारा की शुरुआत भी उन्हीं से होती है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री विश्वास पाटिल ने सभी वक्तव्यों को समेटते हुए

Edit with WPS Office

उदयकाल के लौकिक साहित्य पर नाथ साहित्य के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभावों का व्याख्यान किया। इस सत्र का संचालन डॉ. बिजेन्द्र पाण्डेय (वाराणसी) ने किया।

चौथा सत्र भोजपुरी-हिंदी के सुप्रसिद्ध, सर्वप्रिय कवि पं. हरिराम द्विवेदी की स्मृति काव्य-संध्या के रूप में प्रो. वशिष्ठ अनूप की अध्यक्षता, मुख्य अतिथि डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्र और विशिष्ट अतिथि प्रो. बलिराज पाण्डेय की उपस्थिति तथा डॉ. अशोक सिंह के संयोजन में संपन्न हुआ। कवि-गोष्ठी का शुभारंभ पं. हरिराम द्विवेदी के चित्र पर माल्यार्पण से हुआ। उपर्युक्त के अतिरिक्त सर्वश्री गिरिधर करुण, कवीन्द्र नारायण, लियाकत अली, रचना शर्मा, नागेश त्रिपाठी शांडिल्य, सूर्य प्रकाश मिश्र, धर्मेंद्र गुप्त साहिल, गौतम अरोड़ा सरस, सिद्धनाथ शर्मा, सविता सौरभ, नसीमा निशा, ब्रजेश चंद्र पाण्डेय, करुणा सिंह, संगीता श्रीवास्तव, गिरीश पाण्डेय, वेद प्रकाश पाण्डेय आदि ने हरि भैया को श्रद्धांजलि के रूप में अपनी कविताओं के पाठ से आयोजन के पहले दिन को एक सांस्कृतिक गरिमा प्रदान की।

आयोजन के दूसरे दिन की शुरुआत पाँचवे सत्र के रूप में रासो-परंपरा पर बातचीत से हुई। सर्वश्री सत्येंद्र शर्मा (सतना) ने पृथ्वीराज रासो, नरेंद्र नारायण राय (वाराणसी) ने बीसलदेव रासो, वीरेंद्र निर्झर (बुरहानपुर) ने परमाल रासो, राम सुधार सिंह (वाराणसी) ने विजयपाल रासो, प्रकाश उदय (वाराणसी) ने हम्मीर रासो और अंजलि अस्थाना ने राम रासो के कथ्य और उनसे जुड़े तथ्यों की छानबीन की। रासो के मूल पाठ की अनुपलब्धता या अल्प उपलब्धता, प्रामाणिकता और ऐतिहासिकता की समस्या को सभी ने अपनी-अपनी तरह से संबोधित किया। यह भी प्रायः सभी ने महसूस किया कि रासो काव्यों ने अतिजनप्रियता पाई, इस वजह से भी काफी कुछ इनके पाठ में जुड़ता और छूटता रहा है, और इस क्रम में इनकी ऐतिहासिकता और प्रामाणिकता क्षतिग्रस्त हुई। इसके चलते इन रचनाओं के काव्यगत वैशिष्ट्य भी उपेक्षा के शिकार हुए। इस विमर्श में डॉ. दयानिधि मिश्र ने 'हिंदी साहित्य का उदयकाल' पुस्तक के संपादन के क्रम में रासो-ग्रंथों पर आलेख एकत्र करने की कठिनाइयों के अनुभवों को साझा करते हुए इस तरफ सुधीजन का ध्यान आकर्षित किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. सुरेंद्र प्रताप सिंह ने साहित्येतिहास-लेखन के विभिन्न प्रयत्नों का उल्लेख करते हुए आदिकाल के संदर्भ में शोध-अध्ययन में शिक्षकों-शोधार्थियों की अरुचि के प्रति चिंता जाहिर की। इस सत्र का समन्वय प्रो. गोरखनाथ पाण्डेय (वाराणसी) ने किया।

छठा सत्र प्रो. दिलीप सिंह की अध्यक्षता में पं. विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान के रूप में आयोजित किया गया। 'हिंदी के उदयकाल का अवदान' विषय पर केंद्रित इस व्याख्यान को इस काल के विश्रुत विद्वान श्री ब्रजेंद्र कुमार सिंघल ने प्रस्तुत किया। उन्होंने हिंदी साहित्य के आदिकाल के लिए उदयकाल नाम को अधिक सार्थक और इस आयोजन की एक लब्धि के रूप में रेखांकित किया। इस संज्ञा की तरफ संकेत करने वाले पं. विद्यानिवास मिश्र के संबंध में उन्होंने कहा कि 'आदि' की जगह 'उदय' की बात वे इसलिए भी कर सके कि परंपरा और आधुनिकता दोनो को वे भारतीय संदर्भ में समझते हैं, लोक और शास्त्र दोनो में उनकी अबाध आवाजाही है, वे सर्जनात्मक समीक्षा को 'रीति विज्ञान' में निरूपित कर सकते हैं, 'हिंदी की शब्द-संपदा' को वे लोकजीवन में तलाश सकते हैं। इस काल के विभिन्न आयामों के संदर्भ में भारत भर में अब तक हुए और अभी भी चल रहे शोध-समीक्षा के प्रयत्नों का भी उन्होंने एक रोचक विवरण प्रस्तुत किया और उदयकालीन साहित्य की प्रामाणिकता पर संदेह के कई मिथकों को सप्रमाण निरस्त किया। उन्होंने दिखाया कि कैसे उदयकाल का साहित्य अपने पूर्ववर्ती साहित्य के प्रदेयों को धारे हुए है और कैसे उसके अपने प्रदेयों को उसके उत्तरवर्ती रचना-कर्म ने धारण किया, न सिर्फ धारण किया बल्कि विस्तृत किया, उच्चतर आयामों तक पहुँचाया। प्रो. इन्दीवर (वाराणसी) ने हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य दोनो की विकास-रेखा को उत्तर अपभ्रंश से लेकर अद्यावधि निरूपित किया। सिद्ध, नाथ और संत साहित्य के सम-विषम आयामों को उन्होंने विशेषतः विश्लेषित किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. दिलीप सिंह (अमरकंटक) ने कहा कि भाषा, साहित्य और संस्कृति के सरोकार जन-जन से जुड़े हुए हैं, और इसलिए इन्हें लेकर हम सिर्फ सरकारों से सक्रियता की अपेक्षा रखें यह उचित नहीं है। उन्होंने उदयकाल के गद्य साहित्य के संदर्भ में संक्षेप में ही, लेकिन एक गंभीर चिंतन प्रस्तुत किया और

Edit with WPS Office

इस दिशा में शोध के विविध आयामों की तरफ संकेत किए। पृष्ठभूमि के रूप में संस्कृत और अपभ्रंश के गद्य-सामर्थ्य के विवेचन के साथ ही गद्य के क्षेत्र में अवहट्ठ और दक्खिनी की सक्रियता का रोचक विवरण उन्होंने प्रस्तुत किया। उन्होंने ज्ञान-क्षेत्र से आबद्ध प्रणालियों का उपयोग करते हुए उदयकाल के गद्य साहित्य के नए सिरे से पाठ-विश्लेषण के लिए प्रेरित किया। इस सत्र का संयोजन डॉ. रचना शर्मा (वाराणसी) ने किया।

आयोजन का सातवाँ सत्र उदयकाल के विविध आयामों और प्रवृत्तियों पर केंद्रित था। प्रो. अशोक नाथ त्रिपाठी (वर्धा) ने सम्यक साहित्येतिहास-लेखन के लिए उदयकाल के भाषायी और साहित्यिक अंतर्विरोधों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत पर बल दिया। डॉ. राजेंद्र खटाटे (नासिक) ने भाषा, साहित्य, संस्कृति, समाज और धर्म-अध्यात्म -- प्रत्येक संदर्भ में राष्ट्र के ऐतिहासिक स्मरण में इस काल की उपादेयता सिद्ध की। प्रो. उमापति दीक्षित (आगरा) ने उदयकाल से जुड़ी अनुसंधान-संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डाला, प्रो. सुमन जैन ने उदयकाल की भावभूमि को ऐतिहासिक संदर्भों के साथ तथा प्रो. अखिलेश कुमार दुबे (वर्धा) ने उदयकाल की विभिन्न प्रवृत्तियों को स्पष्ट किया। प्रो. माधवेंद्र पाण्डेय (शिलांग) ने भारतीय सांस्कृतिक समन्वय के आदिग्रंथ पुष्पदंत के महापुराण का विशेष संदर्भ लेते हुए किसी भी पंथ या विचार-दर्शन की प्रासंगिकता को तय करने की भारतीय पद्धति की पहचान के यत्न किए। महापुराणकार जैन मान्यताओं को ही नहीं, अपने पूरे युग को वाणी प्रदान करता है, काव्य-कला के नए मानक गढ़ता है। इस सत्र का समन्वय डॉ उदय प्रताप पाल (आजमगढ़) ने किया।

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के तीसरे दिन के कार्यक्रम -- युवा संवाद, पुरस्कार-वितरण एवं समापन-समारोह -- लाल बहादुर शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चंदौली के पं. पारसनाथ तिवारी नवीन परिसर के सभागार में प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय (पूर्व संकायाध्यक्ष, का.हि.वि.वि.) की अध्यक्षता, मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. राजाराम शुक्ल (पूर्व कुलपति, सं.सं. विश्वविद्यालय, वाराणसी) और विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. शशिकला पाण्डेय (पूर्व आचार्य, म.गां. काशी विद्यापीठ, वाराणसी) की उपस्थिति में संपन्न हुए। आयोजन का शुभारंभ मंचस्थ अतिथियों द्वारा दीप-प्रज्ज्वलन तथा माँ सरस्वती, पं. विद्यानिवास मिश्र और महाविद्यालय के संस्थापक पं. पारसनाथ तिवारी के चित्र पर माल्यार्पण और डॉ. ध्रुव पाण्डेय द्वारा स्तोत्र-पाठ से हुआ। महाविद्यालय के यशस्वी प्राचार्य प्रो. उदयन मिश्र ने अतिथियों एवं उपस्थित सुधीजन का स्वागत किया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को मंचस्थ अतिथियों ने पुरस्कृत किया। निबंध-प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार मदालसा मणि त्रिपाठी (अरुणाचल प्रदेश) को, कविता-प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार अरुणाचल प्रदेश की ही कागो मादो को तथा द्वितीय और तृतीय पुरस्कार लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय के क्रमशः क्षितीश्वर और नीतू पटेल को ; आलेख-प्रतियोगिता का प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार इसी महाविद्यालय की क्रमशः नेहा कुमारी, संजना कुमारी और सुषमा चौहान को प्रदान किया गया। कागो मादो ने अपने काव्य-पाठ के साथ ही वाराणसी के अपने अनुभवों के व्याख्यान से भी प्रभावित किया। पूर्वोत्तर से आए डॉ. आलोक सिंह ने पुष्पदंत के महापुराण पर केंद्रित अपने शोध-आलेख का प्रभावपूर्ण पाठ किया।

प्रो. ब्रजेंद्र कुमार सिंघल (नई दिल्ली) ने युवा अध्यापकों और छात्र-छात्राओं से आत्मीय संवाद स्थापित करते हुए कहा कि उत्कृष्ट रचनाशीलता के लिए अध्ययन और लेखन में गंभीरता जरूरी है। किसी भी रचना के निहितार्थ तक पहुँचने के लिए, जिस परिवेश में उसकी रचना हुई, इसे, और इतिहास से उसके रिश्ते को समझना चाहिए। डॉ. वीरेंद्र निर्झर (बुरहानपुर) ने विद्यार्थियों के लिए एकाग्रता और स्व-अनुशासन के महत्त्व और उसके सामने मौजूद समकालीन चुनौतियों पर प्रकाश डाला। कवि-कथाकार डॉ. मुक्ता ने आचार्य शुक्ल की काव्य-संबंधी मान्यताओं को उद्धृत करते हुए अपने व्यावहारिक अनुभवों के आधार पर रचनाधर्मिता और रचना-प्रक्रिया की सूक्ष्मताओं से परिचित कराया। विशिष्ट अतिथि डॉ. शशिकला पाण्डेय ने कहा कि किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए शार्ट कट जैसी कोई प्रविधि नहीं है। एक गहरी संलग्नता और परिश्रम से पीछे न हटने वाला जो स्वभाव एक भारतीय किसान का है वही हमारे शिक्षार्थियों के लिए भी अपेक्षित है। डॉ. दयानिधि मिश्र ने महाविद्यालय के प्रबंधन, शिक्षक-समुदाय, शिक्षार्थियों और शिक्षणेतर कर्मचारियों के उस सम्मिलित प्रयास की सराहना की

Edit with WPS Office

जिसके चलते न सिर्फ गंभीरतर विषयों पर विचार-विमर्श की निरंतरता कायम हुई है, बल्कि उसके उपयुक्त परिस्थितियाँ भी निर्मित हुई हैं। उन्होंने कहा कि ज्ञान का आदि-अंत नहीं होता, देश-काल के अनुरूप उसके विभिन्न आयामों का नए-नए सिरे से उदय अवश्य होता रहता है। मुख्य अतिथि प्रो. राजाराम शुक्ल ने पं. विद्यानिवास मिश्र के विषम, विपुल और सतत सृजन-कर्म से प्रेरणा लेते हुए स्वयं को सर्वतोभावेन सशक्त करने की सीख दी। उन्होंने उदयकाल के प्रवृत्ति-वैविध्य को उसके वैशिष्ट्य के रूप में रेखांकित किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. श्रीनिवास पाण्डेय ने उदयकाल की राजनीतिक दृष्टि से अतिशय विपन्न स्थिति में भी भारतीय मनीषा और भावबोध को शिखरस्थ रखने के लिए तरह-तरह से यत्नशील साहित्य-साधकों के युग के रूप में याद किया। प्रबंधक श्री राजेश कुमार तिवारी ने महाविद्यालय की तरफ से अतिथियों के प्रति आभार-प्रदर्शन के साथ ही इस तरह के सारस्वत आयोजन की निरंतरता के बने रहने की कामना भी की। इस सत्र का संयोजन प्रो. इशरत जहाँ ने किया।

डॉ. दयानिधि मिश्र

सचिव, विद्याश्री न्यास

Edit with WPS Office